परम ईश्वर

शिष्य थॉमसन

ईश्वर आत्मा, यैश्च तस्योपासनं क्रियत
आत्मना सत्येन योपासनं तैः कर्त्तव्यम्

(परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें। यूहन्ना 4:24 बाइबल)

गर्मी के दिन थे। आचार्य यीशु दास जी आश्रम की सफाई में लगे थे। बाहर आम के वृक्ष की छाया में पास के गाँवों से आये भक्त एकत्र हो गये थे और आचार्य जी की प्रतीक्षा कर रहे थे। आचार्य जी बाहर आये और कुछ चकित दिखे और बोले, 'क्या बात है आज तो प्रातःकाल ही आप सब प्रार्थना के लिये एकत्र हो गये हैं। मैं तो सुबह-सुबह आश्रम की सफाई में लग गया था।' कुछ भक्तों ने प्रतिक्रिया में कहा, 'आचार्य जी आपकी सेवा तो हमें करनी चाहिये, पर आप तो स्वयं सेवक बनकर आश्रम के हर कार्य खुद ही कर रहे हैं।'

आचार्य यीशु दास जी ने इस पर कहा, ''जो तुममें प्रधान हो वही नौकर बने'' क्या तुमने नहीं सुना है?कृपाल जी जोर से बीच में बोल पड़े, ''आचार्य जी हमने सुना है प्रभु यीशु ने कहा था, तुम में जो बड़ा हो, वह सबका सेवक बने।''

बिल्कुल ठीक कहा कृपाल पर क्या प्रभु यीशु की कथनी और करनी में कोई फर्क था 'जब उन्होंने दावा किया था कि मैं ''सेवा लेने नहीं आया, पर सेवा करने आया हूँ'' सच तो ये है कि प्रभु यीशु ने अपने बारह शिष्यों के पाँव स्वयं धोये।

इस बीच भक्तों ने भजन कीर्तन चालू कर दिया और इसके उपरांत बाबू दिनेश महाराज जी ने पूछ ही लिया, 'बोले आचार्य यीशु दास जी हमारा इस आम के वृक्ष की छाया में भक्ति करना क्या उचित है?जबकि हर धर्म के अनुयाई कहते हैं, हमें धर्मस्थलों में, आभूषित सुंदर उपासना गृहों में परम ईश्वर की भक्ति करना चाहिये। हम उपासना गृह बनाकर परम ईश्वर का स्वरूप बनाकर, ध्यान करके भक्ति क्यों न करें?

बाबा जीवन सिंह ने अपना विचार रखा और बोले, ''कण-कण में ईश्वर है तो कहीं भी उपासना-भक्ति करो। अपने जगह पर रहकर अपनी समझ से किसी भी आकार को सामने रख भक्ति उपासना करो।''

इस पर बाबा गौतम जी बोले, ''मुझे क्षमा करें, यह सब सही प्रतीत नहीं हो रहा है।'' और आचार्य जी से आग्रह किया कि हम सब के भ्रम को दूर करें और समझायें। आचार्य यीशु दास जी ने बोलना प्रारंभ किया।

ईश्वर का स्वरूप

परम ईश्वर एक है। वह हम सबका है, न वो धार्मिक उपासना गृहों में रहता है, न कण-कण में रहता है। आराधना घर या उपासना भवन मनुष्य के हाथ की रचना है। उसे रंगने से कलाकारी से, बड़ा-छोटा बनाने से, परम-ईश्वर प्रसन्न नहीं होते हैं। न ही उस पर लगे धन से कोई फर्क पड़ता है। **हम ईश्वर के पास क्यों जाते हैं?** क्या कारीगर की कला या स्वरूप की सुंदरता देखने जाते हैं?ईश्वर के तो गुण आँखों से नहीं दिखते हैं, मन की आँखें अंतरात्मा की आँखें उसे देखती हैं। उसकी पावन पवित्रता देखती है, दया और प्रेम देखती है। उसके न्याय को देखती है। और उसके जीवन का अपने जीवन में अनुभव करती है। ईश्वर कोई तत्त्व नहीं है। ईश्वर स्वयं जीवन है और जीवित है। परम आत्मा है। सर्वशक्तिमान सृजनहार है। हमारा आत्मिक संबंध प्रार्थना द्वारा परम ईश्वर से हो जाता है। बाहरी दिखावे की आवश्यकता नहीं है।

उपासना गृह

भक्ति, प्रार्थना, उपासना कहाँ करना चाहिये, इस सवाल का जवाब प्रभु यीशु ने दिया। इसका वर्णन यूहन्ना 4 बाइबल में लिखा है। यरूशलेम को धर्मस्थान बनाया हुआ था, वहाँ यूहूदियों का भव्य मंदिर स्थापित था। इसको लेकर कई धर्म युद्ध लड़े गये। प्रभु यीशु का सेवा-बलिदान, मृत्यु विजय और स्वर्गारोहण यहीं से हुआ था। पर अपने जीते जी प्रभु ने इस विषय पर क्या कहा। ये एक घटना में मिलता है।

एक बार प्रभु यीशु सामरियों के एक गाँव में गये। यहूदी जातिवादी इन्हें अछूत मानते थे। छुआछूत का बर्ताव करते थे। न उनके घर जाते थे, न खान-पान का संबंध रखते थे। प्रभु यीशु समाज की इन बुरी प्रथाओं का विरोध करते हैं।

प्रभु यीशु कुँए पर बैठे थे, और वहाँ पर जल भरने आई सामरी स्त्री से वे जल का आग्रह करते हैं। इस सामरी स्त्री का गिरा हुआ, पतित जीवन था, वह पाँच पति कर चुकी थी और बिन ब्याहे छठवें के साथ रहती थी। प्रभु यीशु ने उसके हाथ से पानी पिया। और परमेश्वर का प्रेम संदेश सुनाया और उसके गाँव में वे दो दिन और रहे।

सामरी स्त्री का सवाल

सामरी स्त्री ने भी आप जैसा ही सवाल प्रभु यीशु से किया। उसने पूछा, ''प्रभु जी यहूदी कहते हैं कि यरूशलेम की नगरी के भव्य मंदिर में, और हमारे सामरी धर्मगुरु कहते हैं, हमारे पहाड़ पर, जिसे हम पवित्र मानते हैं। वहाँ पर ईश्वर की उपासना करनी है। आप क्या कहते हैं। प्रभु यीशु कहते हैं। न पहाड़ पर न ही तीर्थ

नगरी यरूशलेम के भव्य मंदिर में ईश्वर भक्ति होगी। पर सच्चे भक्त परम ईश्वर की उपासना सत्य और आत्मा से करेंगे।

कण कण में नहीं

जब तक हमारे पास सत्य नहीं होगा और जीवित ईश्वर को नहीं पहचानेंगे तब तक हम उसे स्वरूप देने की कोशिश करेंगे। आँखों से दिखने वाले जीव या प्राणी का स्वरूप देंगे। या निर्जीव कण-कण में ईश्वर को देखने की भूल करेंगे।

परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है। उस सत्य परम ईश्वर को हमें सृष्टि में नहीं ढूँढ़ना है। क्योंकि वह स्वयं सृष्टि के बाहर है। उसे सृष्टि का स्वरूप देना हमारा अज्ञान होगा। इसी कारण परमेश्वर को परमात्मा भी कहा गया है। जो की शारीरिक आँखों से अदृष्य है। पर वह जीवित है। और सर्वसृष्टि पर उसका शासन है। मृत्यु और जीवन, स्वर्ग और नरक, की कुंजी उसी के पास है।

सच्चे भक्त उसे आत्मिक 'सत्य' में ढूँढ़ लेंगे। और उसकी आत्मा का दान पाकर, नये जीवन द्वारा आत्मा और सत्य से भक्ति करेंगे। और मोक्ष प्राप्त करेंगे।

दिनचर्या के जीवन से जुड़ी अच्छी शिक्षा को धर्मों से ले लो पर आत्मा की मुक्ति के लिये धर्म में मत खोजो, धर्मों के ऊपर उठो और सच्चे मुक्तिदाता के पास जाओ।

मुक्ति : हमें जन्म देने वाले ईश्वर की हम संतान है। अपने बच्चों को पिता परम ईश्वर स्वर्गीय जीवन दान देना चाहते हैं। मुक्ति दान देना चाहते हैं। जैसे माता पिता अपने बच्चों को एक सुखद जीवन देना चाहते हैं वैसे ही परम पिता हमें पाप रूपी बीमारी और परिणाम स्वरूप आत्मिक मृत्यु से बचाना चाहते हैं।

बाइबल में दो प्रकार की मृत्यु का उल्लेख है।

पहली शारीरिक मृत्यु : हर मनुष्य जो संसार में जन्म होता है। इसका अनुभव करता है। ये पाप का परिणाम है।

दूसरी आत्मिक मृत्यु : शरीर समाप्ति के बाद आत्मा की यह दशा है। यदि आत्मा नरक के अग्निकुंड में पीड़ित होती है तो उसे दूसरी मृत्यु कहते हैं।

प्रभु यीशु हमें इस आत्मिक मृत्यु से बचाने और मुक्ति देने इस संसार में आये थे। उन्होंने कहा-यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाये तो उसे क्या लाभ होगा। (बाइबल)

प्राण की हानि उठाना आत्मा को मिला अग्निदंड है। जिसे हम नरककुंड के रूप में जानते हैं।

प्रभु यीशु ने कहा, ''मैं इसलिये आया हूँ कि भरपूर जीवन दान करूँ।'' (बाइबल)

पाप का दंड मृत्यु है। जिसे स्वयं प्रभु यीशु सर्व मानव जाति के लिये उठाते हैं। मेरे और आपके पापों का दंड या उसे कीमत कहें प्रभु यीशु चुकाते हैं। प्रभु यीशु ने पापमोचन की सारी शर्तें हमारे लिये पूरी कर दी हैं।

सच्ची भक्ति : भक्ति का अर्थ है, सत्य और जीवित परम ईश्वर को पहचान कर उसकी सत्य बातों को मानना और आदेशों का पालन करना और उससे आत्मिक संबंध प्रार्थना, पवित्र वचन पाठ और भजन गुणगान द्वारा करना।

भक्ति एक सरल और निर्मल हृदय से होनी चाहिये। इसमें किसी भी प्रकार का ऊपरी दिखावा, चमक, लालच, कपट या छल नहीं होना चाहिये। भीमकाय ब्रह्मांड को बनाने वाला परम ईश्वर हमारे, सोना, चाँदी, रुपयों से प्रसन्न नहीं होता है।

सच्ची भक्ति, पापमोचन प्राप्त श्रद्धालुओं द्वारा होती है। रीतिरिवाज की भक्ति का लाभ नहीं है। न वो जीवित ईश्वर के प्रेम को पहचानते हैं। न मुक्ति मार्ग को, न पाप कर्म से मुँह मोड़ते हैं। बुराई का रास्ता नहीं छोड़ते है। तो भक्ति किस काम की?

इस पर सारे भक्त एकजुट हो बोल पड़े—आचार्य जी हमें सच्चे भक्त बनना आपने सिखाया है। अब हमें आप पापमोचन और मुक्ति की प्रार्थना सिखाईये। ताकि हमारी भक्ति परम ईश्वर ग्रहण करें।

आचार्य जी के साथ भक्तों ने प्रार्थना करी। और कहा ये प्रार्थना सभी कर सकते हैं।

पापमोचन की प्रार्थना

हे परम ईश्वर हम मनुष्य अज्ञानी हैं। हमारे अंधकार को दूर करिए। हम पापी हैं, कर्मों में, विचारों में और उद्वेष्यों में, हमारा इनसे छुटकारा करिये, प्रभु यीशु आपने हमारे पापों की कीमत अपने पवित्र खून के बलिदान द्वारा चुकाई है। हम विश्वास करते हैं कि आप ही मुक्तिदाता हैं।

हमारे पापों को क्षमा करें और हमें अपनी पवित्र आत्मा देकर नया जीवन और सनातन मुक्ति दें। यीशु नाम की जय हो।

सारे भक्त शांति और आनंद से भर गये। और अपने रास्ते चल पड़े।

आचार्य यीशु दास जी ने दवा और मरहम पट्टियों का थैला साइकिल पर बाँधा और कुष्ठ ग्राम की तरफ निकल गये।

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

SHISHYASHRAM
[Registered under IndianTrust Act, 1882 Reg. No-2401
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com